वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 443
ISBN-978-93-84003-52-4

सिद्धशिला विधान

–रचयित्री –

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी,
दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत
परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि
श्री ज्ञानमती माताजी

जैनधर्म के प्रथम तीर्थंकर श्री ऋषभदेव भगवान के मोक्षकल्याणक
माघ कृष्णा चौदस (19 फरवरी, 2015) के शुभ अवसर पर
'श्री गौतम गणधर वर्ष' के अन्तर्गत प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.फोन नं.- (01233) 280184, 280994
Website : www.jambudweep.org www.encyclopediaofjainism.com
E-mail : jambudweeptirth@gmail.com
Facebook : jaintirthjambudweep

प्रथम संस्करण	वीर नि. सं. 2541, माघ कृष्णा नवमी	मूल्य
1100 प्रतियाँ	14 जनवरी 2015, मकर संक्रान्ति	20/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएँ भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी
(दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: मार्गदर्शन :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी
(पीएच.डी. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: निर्देशक एवं सम्पादक:–

कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

–: प्रबंध सम्पादक :–

जीवन प्रकाश जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

–कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

अर्हन्तो मंगलं कुर्युः, सिद्धा कुर्युश्च मंगलम्।
आचार्याः पाठकाश्चापि, साधवो मम मंगलम्।।1।।
मंगलं जिनधर्मः स्यात्, जिनवाणी च मंगलम्।
जिनार्चा जिनगेहाश्च, कुर्वन्तु मम मंगलम्।।2।।

वर्तमान में प्रत्येक मनुष्य के मंगलमयी, उज्जवल जीवन के लिए देवदर्शन, जिनाभिषेक, तीर्थयात्रा, दान, भगवत्भक्ति एवं मण्डल विधान आदि का आयोजन एक सशक्त साधन है। इन सबके द्वारा कर्मनिर्जरा होकर महान पुण्य का बंध होता है और भक्त जिनभक्ति करते हुए एक दिन स्वयं भगवान की श्रेणी में आ जाता है। वास्तव में देखा जाए तो प्रत्येक प्राणी की आत्मा में दूध में घी व तिल में तेल की भांति परमात्मा बनने की शक्ति विद्यमान है।

बीसवीं शताब्दी गौरवशाली है जब हमें चारित्रचक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज के प्रथम पट्टाचार्य परम पूज्य आचार्यश्री वीरसागर महाराज की सुशिष्या परम पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी जैसी दिव्य विभूति की प्राप्ति हुई है, जिन्होंने अपने व्यक्तित्व एवं कृतित्व से सम्पूर्ण जैन जगत को आलोकित किया है। साहित्य लेखन के क्षेत्र में तो उन्होंने एक अद्भुत ही कीर्तिमान स्थापित किया है, जिसका प्रतिफल उनके द्वारा लिखित 400 उच्चकोटि के लघु एवं वृहद् ग्रंथ हैं जिन्हें वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला से प्रकाशित कर हम गौरव का अनुभव करते हैं।

उन्होंने जहाँ न्याय, व्याकरण, छंद, अलंकार, भूगोल, खगोल आदि जैनागम के चतुरनुयोगों से समन्वित प्रत्येक विषयों पर अपनी आगमोक्त लेखनी चलाई, वहीं पूजन-विधान के क्षेत्र में उन्होंने भक्ति की अद्भुत गंगा प्रवाहित की है। आज भी प्रायः कहीं न कहीं पूज्य माताजी के द्वारा रचित अनेक लघु एवं वृहद् विधान होते ही रहते हैं।

उसी श्रृँखला में पूज्य माताजी द्वारा रचित यह ''सिद्धपरमेष्ठी विधान'' है, जिसके माध्यम से भव्यात्मा श्रावकजन भगवत् भक्ति कर अपनी कर्मश्रृँखला को नष्ट करने में सक्षम हों और सर्व मनोरथों की सिद्धि के साथ अपनी आत्मा को ऊर्ध्वगामी बनावें, यही शुभेच्छा है।

प्रस्तावना

–ब्र. कु. इन्दु जैन (संघस्थ)

अट्ठविह कम्ममुक्के, अट्ठ गुणट्ठे अणोवमे सिद्धे।
अट्ठमपुढवि णिविट्ठे, णिट्ठिय कज्जे य वंदिमो णिच्चं।।1।।

सर्वज्ञ भगवान से अवलोकित अनंतानंत अलोकाकाश के बहुमध्य भाग में 343 राजू प्रमाण पुरुषाकार लोकाकाश है, यह आदि-अंत से रहित है। इस लोक के तीन भेद हैं—ऊर्ध्वलोक, मध्यलोक और अधोलोक।

तीन भुवन के मस्तक पर 'ईषत्प्राग्भार' नाम की आठवीं पृथ्वी है जो 1 राजू चौड़ी, 7 राजू लम्बी और आठ योजन मोटी है अर्थात् लोक के अन्त पर्यंत है। इस आठवीं पृथ्वी के मध्य में रजतमयी, श्वेत छत्राकार, मनुष्यक्षेत्र के समान गोल, पैंतालीस लाख योजन व्यास वाली सिद्धशिला है। आठवीं पृथ्वी के ऊपर सात हजार पचास धनुष जाकर सिद्धों का आवास है। इन सिद्धों की उत्कृष्ट अवगाहना 525 धनुष और जघन्य साढ़े तीन हाथ है। एक जीव से अवगाहित क्षेत्र के भीतर अनन्त सिद्ध हैं। मनुष्य लोक प्रमाण स्थित तनुवात के उपरिम भाग में सब सिद्धों के सिर एक सदृश होते हैं, अधस्तन भाग में कोई विसदृश होते हैं, इन सिद्धों का सुख वचन के अगोचर है।

इन्हीं सिद्ध परमेष्ठियों से समन्वित उस सिद्धशिला की अर्चन-पूजन कर अपने पुण्य को वृद्धिंगत करने का सौभाग्य हमें प्रदान किया है साक्षात् सरस्वतीस्वरूपा, बीसवीं सदी की प्रथम बालब्रह्मचारिणी परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने, जो स्वयं चलता-फिरता आगम हैं, जिनके अलौकिक व्यक्तित्व एवं कृतित्व के प्रति सम्पूर्ण विश्व नतमस्तक है।

इस परम पावन मंगलकारी विधान में मंगलाचरणपूर्वक सिद्धशिला पूजा है, पुनः प्रथम वलय में प्रथम द्वीप जम्बूद्वीप से सिद्धपद प्राप्त त्रैकालिक सिद्धों के 28 अर्घ्य 1 पूर्णार्घ्य, द्वितीय वलय में लवणोदधि, कालोदधि और पुष्करार्ध द्वीप से सिद्धपद प्राप्त सिद्धों के 13 अर्घ्य व सिद्धशिला के 7 अर्घ्य हैं, इस प्रकार 20 अर्घ्य एवं 2 पूर्णार्घ्य हैं। तृतीय वलय में ढाई द्वीप से सिद्धपद प्राप्त सिद्धों के 170 अर्घ्य हैं, जिसमें जम्बूद्वीप से सिद्धपद प्राप्त सिद्धों के 34 अर्घ्य 1 पूर्णार्घ्य, पूर्वधातकीखण्ड द्वीप से सिद्धपद प्राप्त सिद्धों के 34 अर्घ्य 1 पूर्णार्घ्य, पश्चिम

धातकी खण्ड द्वीप से सिद्धपद प्राप्त सिद्धों के 34 अर्घ्य 1 पूर्णार्घ्य, पूर्व पुष्करार्ध द्वीप के सिद्धपद प्राप्त सिद्धों के 34 अर्घ्य 1 पूर्णार्घ्य और पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप से सिद्धपद प्राप्त सिद्धों के 34 अर्घ्य 1 पूर्णार्घ्य है। इस प्रकार सम्पूर्ण विधान में 218 अर्घ्य और 8 पूर्णार्घ्य हैं, पुनः जयमाला के अन्दर जहाँ-जहाँ से भव्यात्माओं ने सिद्धपद प्राप्त किया, उस स्थल और सिद्धशिला का अत्यन्त सुन्दर वर्णन है।

इस प्रकार यह विधान सम्पूर्ण मनोरथों की सिद्धि के साथ स्वात्म ध्यान से अर्हंत अवस्था को प्राप्त कराने वाला है अतएव इस विधान को करने-कराने वाले भव्य प्राणी अपनी आत्मा का कल्याण करने में सफल हों और ऐसी महान विधानों की रचनाकर्त्री, सिद्धों की श्रेणी में अपना नाम अंकित कराने वाली परम पूज्यनीया माताजी चिरायु होकर सदैव हम सब पर अपना वरदहस्त बनाए रखें और ऐसी महान कृतियों से हमें लाभान्वित करती रहें, यही मंगल भावना है।

आभार

इस ग्रंथ के प्रकाशन हेतु पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन गुरुकुल-महाराजगंज, हैदराबाद के प्रमुख श्री मांगीलाल जी बाबूलाल जी विजय कुमार पहाड़े, होटल राजधानी, सिदयम्बर बाजार, हैदराबाद ने आर्थिक सौजन्य प्रदान किया एतदर्थ हम आपके ज्ञानदान की भावनाओं का सम्मान करते हुए संस्थान की ओर से आपके प्रति बहुत-बहुत धन्यवाद एवं आभार ज्ञापित करते हैं। आगे भी इसी प्रकार ग्रंथ प्रकाशन व धर्म कार्यों में आप अपनी चंचला लक्ष्मी का सदुपयोग करते रहें, यही मंगल भावना है।

-सम्पादक

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान– टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि– आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991, (22 अक्टूबर सन् 1934)

जाति– अग्रवाल दि. जैन, **गोत्र–** गोयल, **नाम–** कु. मैना

माता-पिता– श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत– ई. सन् 1952, बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन

क्षुल्लिका दीक्षा– चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से। नाम-क्षुल्लिका वीरमती

आर्यिका दीक्षा– वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व– अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं लगभग 300 ग्रंथों की लेखिका।

डी.लिट्. की मानद उपाधि– सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा एवं तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद द्वारा 8 अप्रैल 2012 को ''डी.लिट्.'' की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा– हस्तिनापुर में जंबूद्वीप, तेरहद्वीप, तीनलोक आदि रचनाओं के निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा-भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा, महावीर जी तीर्थ पर महावीर धाम में पंचबालयति मंदिर, शिर्डी में ज्ञानतीर्थ, सम्मेदशिखर में आचार्य श्री शांतिसागर धाम इत्यादि।

महोत्सव प्रेरणा– पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव, दिल्ली में कल्पद्रुम महामण्डल विधान का ऐतिहासिक आयोजन इत्यादि। विशेषरूप से 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।

शैक्षणिक प्रेरणा– 'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार, ऑनलाइन जैन इनसाइक्लोपीडिया आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा– जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

विषयानुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ संख्या
1. मंगलाचरण (सिद्धभक्ति-प्राकृत) एवं हिन्दी पद्यानुवाद	1
2. सिद्धशिला पूजा	3
3. प्रथम वलय में 28 अर्घ्य	6
4. द्वितीय वलय में 13 अर्घ्य	13
5. सिद्धशिला के 7 अर्घ्य	16
6. तृतीय वलय में 170 अर्घ्य	18
7. जम्बूद्वीप से सिद्धपदप्राप्त सिद्धों के 34 अर्घ्य	18
8. पूर्वधातकीखण्डद्वीप से सिद्धपदप्राप्त सिद्धों के 34 अर्घ्य	21
9. पश्चिमधातकीखण्डद्वीप से सिद्धपदप्राप्त सिद्धों के 34 अर्घ्य	25
10. पूर्व पुष्करार्धद्वीप से सिद्धपदप्राप्त सिद्धों के 34 अर्घ्य	29
11. पश्चिम पुष्करार्धद्वीप से सिद्धपदप्राप्त सिद्धों के 34 अर्घ्य	34
12. जयमाला	38
13. सिद्धशिला विधान प्रशस्ति	42
14. सिद्धशिला विधान की आरती	43
15. भजन	44

सिद्धशिला विधान का मण्डल

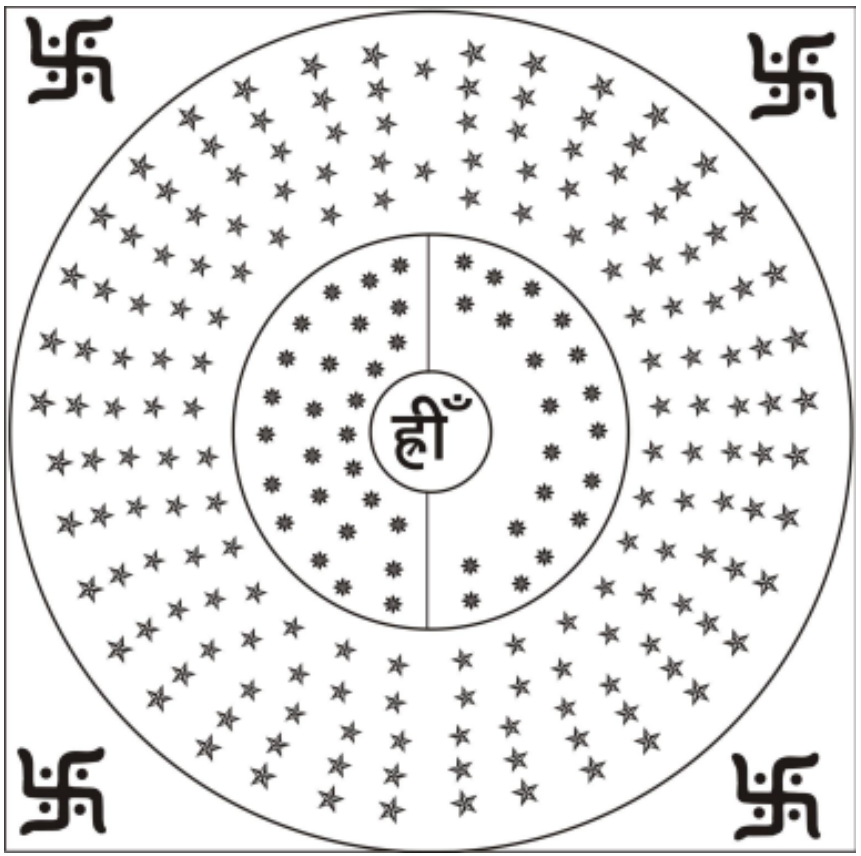

प्रथम वलय में -28 अर्घ्य 1 पूर्णार्घ्य
द्वितीय वलय में -20 अर्घ्य 2 पूर्णार्घ्य
तृतीय वलय में -170 अर्घ्य 5 पूर्णार्घ्य

कुल -218 अर्घ्य एवं 8 पूर्णार्घ्य

सिद्धशिला विधान

मंगलाचरण

(सिद्धभक्ति-प्राकृत)

अट्ठविह-कम्ममुक्के, अट्ठ-गुणट्ठे अणोवमे सिद्धे।
अट्ठमपुढवि-णिविट्ठे, णिट्ठिय-कज्जे य वंदिमो णिच्चं।।1।।

तित्थयरे-दरसिद्धे, जल-थल-आयासणिव्वुदे सिद्धे।
अंतयडे-दरसिद्धे, उक्कस्स-जहण्ण-मज्झिमोगाहे।।2।।

उड्ढ-मह-तिरियलोए, छव्विह-काले य णिव्वुदे सिद्धे।
उवसग्ग-णिरुवसग्गे, दीवोदहि-णिव्वुदे य वंदामि।।3।।

पच्छायडेय सिद्धे, दुग-तिग-चदुणाण-पंच-चदुर-जमे।
परिपडिदा-परिपडिदे, संजम-सम्मत्त-णाण-मादीहिं।।4।।

पण-णव-दु-अट्ठवीसा-चउ तिय-णवदी य दोण्णि पंचेव।।
वावण्णहीण-बियसय-पयडिविणासेण होंति ते सिद्धा।।5।।

अइसय-मव्वावाहं, सोक्ख-मणंतं अणोवमं परमं।
इंदियविसयातीदं, अप्पत्तं अच्चवं च ते पत्ता।।6।।

लोयग्ग-मत्थयत्था, चरम-सरीरेण ते हु किंचूणा।
गयसित्थ-मूसगब्भे, जारिस-आयार तारिसायारा।।7।।

जर-मरण-जम्मरहिया, ते सिद्धा मम सुभत्ति-जुत्तस्स।
दिंतु वर णाण-लाहं, बुहयण-परिपत्थणं परमशुद्धं।।8।।

(हिन्दी पद्यानुवाद)

श्री सिद्धचक्र सब आठ कर्म, विरहित औ आठ गुणोंयुत हैं।
अनुपम हैं सब कार्य पूर्ण कर, अष्टम पृथ्वी पर स्थित हैं।।
ऐसे कृतकृत्य सिद्धगण का, हम नितप्रति वंदन करते हैं।
मन वचन काय की शुद्धी से, शिरसा अभिनन्दन करते हैं।।1।।

तीर्थंकर होकर सिद्ध हुए, बिन तीर्थंकर जो सिद्ध हुए।
जल से थल से जो सिद्ध हुए, जो भी आकाश से सिद्ध हुए।।
जो हुए अंतकृत केवलि या, बिन हुए सिद्धि को प्राप्त हुए।
उत्तम जघन्य मध्यम तनु की, अवगाहन धर जो सिद्ध हुए।।2।।

जो ऊर्ध्वलोक औ अधोलोक, औ तिर्यक् लोक से सिद्ध हुए।
उत्सर्पिणि अवसर्पिणी के भी, छह कालों से जो सिद्ध हुए।।
उपसर्ग सहन कर सिद्ध हुए, उपसर्ग बिना भी सिद्ध हुए।
उन सबको वंदूं ढाई द्वीप, दो समुद्र से जो सिद्ध हुए।।3।।

मति श्रुत से केवलज्ञान प्राप्त, या तीन ज्ञान या चार सहित।
केवलज्ञानी हो सिद्ध हुए, पांचों संयम या चार सहित।।
संयम समकित औ ज्ञान आदि, से च्युत हो पुनि ग्रह सिद्ध हुए।
जो संयम समकित ज्ञान आदि, से बिना पतित हो सिद्ध हुए।।4।।

पण नव दो अट्ठाईस चार, तेरानवे दो औ पांच प्रकृति।
इक सौ अड़तालिस प्रकृति नाश, सब सिद्ध हुए प्रणमूं नितप्रति।।5।।

जो अतिशय अव्याबाध सौख्य, और अनंत अनुपम परम कहा।
इंद्रिय विषयों से रहित, पूर्व, अप्राप्त, ध्रौव्य को प्राप्त किया।।6।।

लोकाग्रशिखर पर स्थित वे, अंतिम तनु से किंचित् कम हैं।
गल गया मोम सांचे अंदर, आकार सदृश आकृति धर हैं।।7।।

वे जन्म मरण औ जरा रहित, सब सिद्ध भक्ति से नुति उनको।
बुधजन प्रार्थित और परम शुद्ध, वर ज्ञानलाभ देवो मुझको।।8।।

।।अथ जिनयज्ञप्रतिज्ञापनाय मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

सिद्ध शिला पूजा

अथ स्थापना-शंभु छंद

श्री सिद्धशिला नरलोक मात्र पैंतालिस लाख सुयोजन है।
त्रैलोक्य शिखर पर अष्टम भू पर, रुक्मी[1] अर्धचंद्र सम है।।
श्री सिद्ध अनंतानंत इसी पर तिष्ठें अष्ट गुणान्वित हैं।
आह्वानन कर इनको पूजूँ ये देते सौख्य अपरिमित हैं।।1।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यशिखरस्थितसिद्धशिलोपरिविराजमान-अनंतानंतसिद्धसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यशिखरस्थितसिद्धशिलोपरिविराजमान-अनंतानंतसिद्धसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यशिखरस्थितसिद्धशिलोपरिविराजमान-अनंतानंतसिद्धसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

-अथ अष्टक-शंभु छंद -

श्री सिद्ध सुयश सम उज्जवल जल लेकर झारी भर लाया हूँ।
निज समरस सुख पाने हेतू, प्रभु चरण चढ़ाने आया हूँ।।
श्री सिद्धशिला को नित पूजूँ, सब सिद्ध अनंतानंत जजूँ।
सर्वार्थसिद्धि को पाकर के, इस सिद्धशिला पर शीघ्र बसूँ।।1।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यशिखरस्थितसिद्धशिलोपरिविराजमान-अनंतानंतसिद्धेभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सिद्ध गुणों सम अतिशीतल चंदन घिसकर ले आया हूँ।
निज की शीतलता पाने को, प्रभु चरण चढ़ाने आया हूँ।।
श्री सिद्धशिला को नित पूजूँ, सब सिद्ध अनंतानंत जजूँ।
सर्वार्थसिद्धि को पाकर के, इस सिद्धशिला पर शीघ्र बसूँ।।2।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यशिखरस्थितसिद्धशिलोपरिविराजमान-अनंतानंतसिद्धेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

1. चांदी की सिद्धशिला है।

श्री सिद्ध सौख्य सम खंडरहित, उज्जवल तंदुल ले आया हूँ।
निज आत्म सौख्य पाने हेतू, प्रभु पुंज चढ़ाने आया हूँ।।
श्री सिद्धशिला को नित पूजूँ, सब सिद्ध अनंतानंत जजूँ।
सर्वार्थसिद्धि को पाकर के, इस सिद्धशिला पर शीघ्र बसूँ।।3।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यशिखरस्थितसिद्धशिलोपरिविराजमान-अनंतानंतसिद्धेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सिद्ध गुणों सम अति सुगंध, पुष्पों को चुनकर लाया हूं।
निज गुण सुगंधि पाने हेतू, प्रभु चरणों पुष्प चढ़ाया हूँ।।
श्री सिद्धशिला को नित पूजूँ, सब सिद्ध अनंतानंत जजूँ।
सर्वार्थसिद्धि को पाकर के, इस सिद्धशिला पर शीघ्र बसूँ।।1।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यशिखरस्थितसिद्धशिलोपरिविराजमान-अनंतानंतसिद्धेभ्यः कामवाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सिद्ध पुष्टि सम नानाविध पकवान बनाकर लाया हूं।
निज आत्मतृप्ति पाने हेतू, प्रभु चरण चढ़ाने आया हूँ।।
श्री सिद्धशिला को नित पूजूँ, सब सिद्ध अनंतानंत जजूँ।
सर्वार्थसिद्धि को पाकर के, इस सिद्धशिला पर शीघ्र बसूँ।।5।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यशिखरस्थितसिद्धशिलोपरिविराजमान-अनंतानंतसिद्धेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सिद्ध ज्ञान सम ज्योतिर्मय, कर्पूर जलाकर लाया हूँ।
निज ज्ञानज्योति पाने हेतू, मैं आरति करने आया हूँ।।
श्री सिद्धशिला को नित पूजूँ, सब सिद्ध अनंतानंत जजूँ।
सर्वार्थसिद्धि को पाकर के, इस सिद्धशिला पर शीघ्र बसूँ।।6।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यशिखरस्थितसिद्धशिलोपरिविराजमान-अनंतानंतसिद्धेभ्यः मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सिद्ध गुणों की सुरभि सदृश, वर धूप सुगंधित लाया हूं।
निज आत्मसुरभि पाने हेतू, अग्नी में धूप जलाया हूँ।।

श्री सिद्धशिला को नित पूजूँ, सब सिद्ध अनंतानंत जजूँ।
सर्वार्थसिद्धि को पाकर के, इस सिद्धशिला पर शीघ्र बसूँ।।7।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यशिखरस्थितसिद्धशिलोपरिविराजमान-अनंतानंतसिद्धेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सिद्ध सुखामृत सदृश मधुर रस भरे बहुत फल लाया हूं।
निज मोक्ष सुफल हेतू भगवन्! फल आज चढ़ाने आया हूँ।।
श्री सिद्धशिला को नित पूजूँ, सब सिद्ध अनंतानंत जजूँ।
सर्वार्थसिद्धि को पाकर के, इस सिद्धशिला पर शीघ्र बसूँ।।8।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यशिखरस्थितसिद्धशिलोपरिविराजमान-अनंतानंतसिद्धेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सिद्ध गुणों के सम अनर्घ यह अर्घ सजाकर लाया हूँ।
निज तीन रत्न पाने हेतू, प्रभु चरण चढ़ाने आया हूँ।।
श्री सिद्धशिला को नित पूजूँ, सब सिद्ध अनंतानंत जजूँ।
सर्वार्थसिद्धि को पाकर के, इस सिद्धशिला पर शीघ्र बसूँ।।9।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यशिखरस्थितसिद्धशिलोपरिविराजमान-अनंतानंतसिद्धेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-सोरठा-

सिद्धशिला पर आज, मन से जलधारा करूँ।
पूर्ण शांति साम्राज्य, मिले त्रिजग में शांति हो।।10।।

शांतये शांतिधारा।

सिद्धशिला पर आज, पुष्पांजलि मन से करूँ।
मिले सिद्धि साम्राज्य, त्रिभुवन की सुख संपदा।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

(प्रथम वलय में 28 अर्घ्य)

-दोहा-

भूत भविष्यतकाल के, वर्तमान के सिद्ध ।
पुष्पांजलि कर पूजते, मिले सिद्धि नवनिद्धि।।1।।

।।इति मंडलस्योपरि प्रथम वलये पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

-शंभुछंद-

जम्बूद्वीप भरतैरावत में, आरजखंड में षट्परिवर्तन।
चौथे हि काल में मुक्ती हो, नहिं अन्य काल में मुक्तिगमन।।
चौथे के जन्में पंचम में , शिवपद पा कोई नर इस विध।
उपसर्ग निमित छहकाल में भी, मुक्ती हो सबको जजूँ त्रिविध।।1।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपस्थभरतैरावतार्यखंडयोः षट्कालेभ्यः सिद्धपदप्राप्तत्रैकालिक-सर्वसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कच्छा आदिक बत्तिस विदेह के, आर्यखंड में शाश्वत ही।
शिव प्राप्त करें नरपुंगव नित, वहां काल परावर्तन नाहीं।।
उन क्षेत्रों से जो सिद्ध हुये, होते हैं होवेंगे आगे।
उन सबकी पूजा भक्ति करें, मेरे सब पाप शत्रु भागें।।2।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपस्थ द्वात्रिंशत्विदेहक्षेत्रार्यखंडेभ्यः सिद्धपदप्राप्तप्राप्नुवत्प्राप्स्य-त्सर्वसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैमवत हरी देवकुरु उत्तरकुरु रम्यक औ हैरण्यवतं।
इन छह में भोगभूमि मानी, जो जघन्य मध्यम औ उत्तम।।
निज इच्छा से कोई मुनि भी, उपसर्ग निमित से या कोई।
उन क्षेत्रों से मुक्ती पाते, सब सिद्ध जजूँ मन शुचि होई।।3।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपस्थ षट्भोगभूमिक्षेत्रेभ्यःसिद्धपदप्राप्तत्रैकालिकसर्वसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इक सौ सत्तर हैं म्लेच्छ खंड, वहां ऋद्धि सहित मुनि जा सकते।
अथवा उपसर्ग निमित कोई, वहां ले जाकर मुनि को रखते।।

वहां केवलज्ञान प्राप्त करके, शिव प्राप्त करें अगणित मुनिगण।
उन सब सिद्धों को पूजूँ मैं, मेरे भी प्रगटित हो गुणगण।।4।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपस्थसप्तत्यधिकशतम्लेच्छखंडेभ्यःसिद्धपदप्राप्तत्रैकालिक-सर्वसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस जंबूद्वीप के बीच सुमेरू, पर्वत तुंग कहाता है।
पृथ्वी पर दश हजार योजन, विस्तृत औ गोल कहाता है।।
पृथ्वी के भद्रशालवनयुत, इस गिरि से कूट गुफादिक से।
जो सिद्ध हुये होते होंगे, उन सबको पूजूँ भक्ती से।।5।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपस्थसुदर्शनमेरोः भद्रशालवनकूटशिखरगुफादिसर्वस्थानेभ्यः सिद्धपदप्राप्तत्रैकालिकसर्वसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हिमवन महाहिमवन निषध नील, रुक्मी शिखरी छह पर्वत से।
इन पर जो कूट भवन वन की, वेदी हैं उन सब स्थल से।।
जो सिद्ध हो चुके, होते हैं, आगे होंगे सब सिद्धों को।
मैं पूजूँ अर्घ चढ़ा करके, फिर निज में ही पाऊँ निज को।।6।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपस्थहिमवदादिषट्कुलपर्वतानां शिखरकूटभवनादिभ्यः सिद्ध-पदप्राप्तत्रैकालिकसर्वसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरू की चारों विदिशा में, गजदंत चार पर्वत सुंदर।
उन पर से सिद्ध हुये होते, होवेंगे जो भी उत्तम नर।।
उन सबको अर्घ चढ़ा करके, भव भव के दुःखों से छूटूँ।
निज आत्म सुधारस को पाकर, निज परमातम सुख को भोगूँ।।7।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपस्थचतुर्गजदंतपर्वतेभ्यः सिद्धपदप्राप्तत्रैकालिकसर्वसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्वापर क्षेत्र विदेह मध्य, सोलह वक्षार गिरी मानें।
उन पर से जो नर सिद्ध हुये, होते हैं, होवेंगे मानें।।
उन सबको पूजूँ अर्घ लिये, वे सिद्धिवधू के स्वामी हैं।
भक्तों की सिद्धी में निमित्त, वे सबके अंतर्यामी हैं।।8।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपस्थषोडशवक्षारपर्वतेभ्यः सिद्धपदप्राप्तप्राप्नुवत्प्राप्स्यत्त्रै-कालिकसर्वसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भरतैरावत बत्तिस विदेह, इन चौंतिस कर्मभूमियों में।
चौंतिस विजयार्ध अचल मानें, त्रय त्रय कटनी हैं उन सबमें।।
इन पर्वत से जो मुक्त हुये, होते हैं आज व होवेंगे।
उन सबको पूजूँ अर्घ लिये, वे मेरा कलिमल धोवेंगे।।9।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपस्थचतुस्त्रिंशतकर्मभूमिगतचतुस्त्रिंशत्विजयार्धपर्वतेभ्यः सिद्धपदप्राप्तत्रैकालिकसर्वसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं नाभिगिरी हैमवत व हरि, रम्यक हिरण्यवत क्षेत्रों में।
ये चार अचल हैं ठीक बीच, उन भोगभूमि के क्षेत्रों में।।
उनसे जो मानव सिद्ध हुये, प्रायः परकृत उपसर्गों से।
उन सबको अर्घ चढ़ाऊं मैं, मेरे वांछित फलते इनसे।।10।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपस्थचतुर्नाभिगिरिभ्यः सिद्धपदप्राप्तत्रैकालिकसर्वसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नीलाचल से मेरू की तरफ, सीता के पूर्व-अपर तट पर।
निषधाचल से मेरू की ओर, सीतोदा पूर्व-अपर तट पर।।
ये चार यमकगिरि चित्र विचित्र, यमक औ मेघ नाम वाले।
इनसे जो सिद्ध हुये मानव, उनको पूजें शिवमुख पालें।।11।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपस्थचतुर्यमकगिरिभ्यः सिद्धपदप्राप्तत्रैकालिकसर्वसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन देवकुरू उत्तरकुरु में, सीता सीतोदा के तट पर।
दो-दो दिग्गज पर्वत माने, ये आठ कहे सुर हैं इन पर।।
पद्मोत्तरनील, स्वस्तिक अंजन व कुमुद पलाश अवतंस रोचन।
इनसे जो मुक्त हुये मानव, उनकी पूजा से हो शोभन।।12।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपस्थ-अष्टदिग्गजपर्वतेभ्य : सिद्धपदप्राप्तत्रैकालिकसर्वसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब कर्मभूमि चौंतिस में छह, खंडों में आर्यखंड इक है।
पण म्लेच्छखंड के मध्यम में, वृषभाचल एक एक गिरि हैं।।

इन चौंतिस पर्वत से अनंत, मुनि सिद्ध हुये होते होंगे।
उन त्रयकालिक सब सिद्धों को, पूजूँ वे मम भ्रम खोवेंगे।।13।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपस्थचतुस्त्रिंशत्वृषभाचलेभ्यः सिद्धपदप्राप्तत्रैकालिक-सर्वसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीता सीतोदा के अंदर हैं, बीस सरोवर उन तट पर।
कांचनगिरि पांच पांच माने, सब मिलकर दो सौ हैं सुंदर।।
उन पर शुक वर्ण सदृश सुर हैं, उन गिरि से सिद्ध हुये जो भी।
उन त्रयकालिक भी सिद्धों को, पूजूँ मम कर्म नशें सब भी।।14।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपस्थद्विशतकांचनगिरिभ्यः सिद्धपदप्राप्तत्रैकालिक-सर्वसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तरकुरु में है जंबुवृक्ष, औ देवकुरू में शाल्मलि है।
इन दोनों की बारह वेदी, जो चारों तरफी घेरे हैं।।
उनमें परिवारवृक्ष इक लख, चालिस हजार इक सौ उन्निस।
उन स्थल से जो सिद्ध हुये, उन सबको पूजूँ नाय शीश।।15।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपस्थसपरिवारजंबूवृक्षशाल्मलिवृक्षेभ्यः सिद्धपदप्राप्तत्रैकालिक-सर्वसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गंगा सिंधू रोहित रोहीतास्या व हरित् हरिकांत नदी।
सीता सीतोदा नारी नरकांता सुवर्ण रुपकूला भी।।
रक्ता रक्तोदा ये चौदह नदियां निज निज परिवार सहित।
इन जलमय क्षेत्रों से मुक्ती, पाई उन सबको जजूँ स्वहित।।16।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपस्थनिजनिजपरिवारनदीकुंडतोरणद्वारसहितगंगादिचतुर्दश-नदीभ्यः सिद्धपदप्राप्तत्रैकालिकसर्वसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्वापर क्षेत्र विदेह मध्य, बारह विभंग नदियां मानी।
ये क्षेत्र भेद में सीमासम, अकृत्रिम नदियां सरधानी।।
परिवार नदी अठबीस सहस, प्रत्येक नदी की तुम मानो।
उन जल से भी जो मुक्ति गये, उनकी पूजा कर दुख हानो।।17।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपस्थनिजनिजपरिवारनदीकुंडतोरणद्वारसमेतद्वादश-विभंगानदीभ्यः सिद्धपदप्राप्तत्रैकालिकसर्वसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बत्तिस विदेह में गंगसिंधु, रक्ता रक्तोदा नदियां हैं।
चौदह हजार परिवार सहित, प्रतिक्षेत्र में दो दो नदियां हैं।।
इन जल स्थान से जो मुनिगण, उपसर्ग सहन कर सिद्ध हुये।
उन त्रयकालिक सब सिद्धों को, जजते मुझ सिद्धि निमित्त हुये।।18।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपस्थद्वात्रिंशत्विदेहसंबंधिनिजनिजपरिवारनदीकुंडतोरणद्वार-सहितचतुःषष्टिगंगादिनदीभ्यः सिद्धपदप्राप्तत्रैकालिकसर्वसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो कर्मभूमि चौंतिस के आर्य-खंड में उपसमुद्र माने।
राजधानि से वार्धि तथा महानदी तरफ में ही माने।।
उन सब समुद्र से जो मुनिवर, उपसर्ग निमित से सिद्ध हुये।
उन सबको प्रणमूँ बार बार, वे मुझ पातकक्षय हेतु हुये।।19।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपस्थचतुस्त्रिंशत्आर्यखंडगतचतुस्त्रिंशत्उपसमुद्रेभ्यः सिद्धपदप्राप्तत्रैकालिकसर्वसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भरतैरावत दो क्षेत्रों में, कृत्रिम नग गुफा कंदरादिक।
तालाब नदी वापी कुल्या, कूपादि महासागर आदिक।।
निज रुचि से वा पर के निमित्त, इन स्थानों से सिद्ध हुये।
उन सब को अर्घ चढ़ाऊँ मैं, वे सब मुझ सिद्ध निमित्त कहे।।20।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपस्थभरतैरावतमध्ये कृत्रिमपर्वतनदीगुफाकंदराद्रहनदीवापी-कुल्याकूपमहासागर-आदिस्थानेभ्यःसिद्धपदप्राप्तत्रैकालिकसर्वसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जंबूद्वीप का परकोटा, अठयोजन तुंग रत्ननिर्मित।
तल में बारह मधि में सुआठ, ऊपर चउ योजन से संयुत।।
इसके ऊपर मधि में वेदी, के उभय पार्श्व में वनखंड हैं।
इस परकोटे से सिद्ध हुये, उनको मम शिरसा वंदन है।।21।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपजगतीतत्रस्थचतुर्महाद्वारस्थानेभ्यः सिद्धपदप्राप्तत्रैकालिक-सर्वसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कोई नर साढ़े तीन हाथ, कुछ सवा पांच सौ धनुष तुंग।
नर शिव पाते जघन्य उत्तम, मध्यम मधि की ऊंचाईयुत।।

इन अगणित अवगाहन संयुत, जो सिद्ध हुये उन त्रयकालिक।
सब सिद्धों को नितप्रति पूजूँ , मेरी आत्मा हो स्वयंसिद्ध।।22।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपस्थजघन्यमध्यमोत्तमशरीरावगाहनाभ्यः सिद्धपदप्राप्त-त्रैकालिकसर्वसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कोई मानव कुछ अधिक आठ, वर्षों की जघन आयु लेकर।
कोई इक कोटी पूर्व वर्ष, की उत्तम आयू को लेकर।।
मध्यम के भेद मध्यगत सब, इन आयू से जो सिद्ध हुये।
उन सबको पूजूँ अर्घ लिये, अपमृत्यु टले बस इसीलिये।।23।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपस्थजघन्यमध्यमोत्तमआयुर्भ्यःसिद्धपदप्राप्तत्रैकालिक-सर्वसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कोई नर स्त्रीभाववेद, व नपुंसक भाववेद लेकर।
कोई नर पुरुष भाववेदी, ये शिवपद पाते तीनों नर।।
पर निश्चित ही हो द्रव्य पुरुष, सिद्धान्त यही बतलाता है।
सम विषम वेद से सिद्ध हुये, उन पूजूँ वे सुखदाता हैं।।24।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपस्थभावगतविषमसमवेदधारकद्रव्यपुरुषवेदेभ्यः सिद्धपदप्राप्त-त्रैकालिकसर्वसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कोई मुनिवर पद्मासन से , या खड्गासन से सिद्ध बनें।
सिद्धी का आसन अन्य नहीं, यह सब सिद्ध ग्रंथ वर्णें।।
इन सबके भी आकार वहां, आत्मा प्रदेश से बन जाते।
हो देह नष्ट फिर भी वैसे, मानें उन पूजूँ मन लाके।।25।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपस्थपद्मासनखड्गासनेभ्यः सिद्धपदप्राप्तत्रैकालिक-सर्वसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बत्तिस विदेह में कर्मभूमि , शाश्वत वहँ काल चतुर्थ सदा।
भरतैरावत में छह कालों, का परिवर्तन होता रहता।।

अवसर्पिणि चौथे काल तथा, उत्सर्पिणि काल तीसरे से।
हुंडावसर्पिणी तिसरे में, शिव पहुंचे जजूँ उन्हें रुचि से।।26।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपस्थद्वात्रिंशत्विदेहक्षेत्रेभ्यः संततसिद्धपदप्राप्तेभ्यः भरतैरावतक्षेत्रसंबंधिचतुःकालेभ्यः कदाचित् चतुर्थकालजन्मप्राप्तमनुष्यपंचम-कालेभ्यः हुंडावसर्पिणीनिमित्ततृतीयकालेभ्यश्चसिद्धपदप्राप्तत्रैकालिक-सर्वसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर होकर पंचकल्याणक , त्रय द्वय पा बहु सिद्ध हुये।
चक्रेश्वर हलधर कामदेव, उत्तम पद पा बहु सिद्ध हुये।।
सामान्य मनुज अगणित अनंत, सब कार्य नष्ट कर सिद्ध हुये।
उन सब त्रैकालिक सिद्धों को, मैं जजूँ सदा धर भक्ति हिये।।27।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपस्थतीर्थंकरचक्रवर्तीबलभद्रकामदेवादिपदप्राप्तसामान्य-मनुष्यादित्रैकालिकसर्वसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब गिरि वन पर्वत गुफा नदी, सरवर तरु कूप तड़ागों से।
तलघर नभ आंगन छिद्र बिलादिक , जल थल के सब भागों से।।
मेरू की चूलिका से जहां से, है बालमात्र अंतर ऊपर।
उस जगह मेरु की गुफा मध्य से , सिद्ध हुये पूजूँ रुचिधर।।28।।

ॐ ह्रीं मेरुचूलिकागिरिपर्वतगुफानदीसरोवरवृक्षकूपतडागछिद्रबिलादि-सुरंगजलस्थलादिसर्वस्थानात्सिद्धपदप्राप्तत्रैकालिकसर्वसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-दोहा-

प्रथम द्वीप से सिद्ध पद, प्राप्त करें जो भव्य।
उन सबको पूर्णार्घ्य से, जजूँ मिले पद नव्य।।30।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपात् सिद्धपदप्राप्तत्रैकालिकसर्वसिद्धेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

(द्वितीय वलय में 13 अर्घ्य)

-दोहा-

सिद्ध अनंतों पूजते, सर्व कार्य हों सिद्ध।
पुष्पांजलि कर पूजते, हों प्रसन्न सब सिद्ध।।1।।

।।इति द्वितीय वलये मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

शंभु छंद

लवणोदधि से लंकादि द्वीप कूभोगभूमि बहु स्थल हैं।
वहाँ से जो मुनिवर मुक्त हुये उपसर्ग व इच्छा के वश हैं।।
इन सब सिद्धों को पूजूँ नित ये भव दुःख हरने वाले हैं।
ये स्थलसिद्ध अनंते हैं ये सब सुख करने वाले हैं।।1।।

ॐ ह्रीं लवणोदधिसंबंधिलंकादिद्वीपकुभोगभूमि-आदिस्थलेभ्यः सिद्धपदप्राप्त-सर्वसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वीपों के नदी सरोवर से लवणोदधि के जल ऊपर से।
उपसर्ग आदि के कारण से बहुते मुनिवर शिवपुर पहुँचे।।
इन सब सिद्धों को पूजूँ नित ये परमानंदाबुधि न्हावें।
ये जल से सिद्ध अनंते हैं इनको वंदत निज सुख पावें।।2।।

ॐ ह्रीं लवणोदधिसंबंधिलंकादिद्वीपमध्यस्थितनदी-सरोवरकूपतडागादि-जलसमुद्रजलस्थानेभ्यःसिद्धपदप्राप्त-सर्वसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लवणोदधि मध्य हंस आदिक लंकादि द्वीप में पर्वत हैं।
इन पर से सिद्ध हुये जो मुनि उपसर्ग आदि के कारण हैं।।
लवणोदधि वेदी ऊपर से या वहीं अन्य वृक्षादी से।
जो सिद्ध हुये उनको पूजूँ जिससे निजात्म शक्ती प्रगटे।।3।।

ॐ ह्रीं लवणोदधिसंबंधिलंकादिद्वीपस्थितत्रिकूटाचलादिपर्वतेभ्यः सिद्धपद-प्राप्तसर्वसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वरद्वीप धातकी खंड द्वितिय में कर्मभूमि अरु भोगभूमि।
वन उपवन की भू आदि स्थल, से सिद्ध हुये पावनभूमी।।

तीर्थंकरगण मुनिगण बहुते सब कर्म काटकर मुक्त हुये।
उपसर्ग आदि से सब थल से उन पूजत सौख्य अनंत लिये।।4।।

ॐ ह्रीं धातकीखंडद्वीपसंबंधिकर्मभूमिभोगभूमि-आदिस्थलेभ्यः सिद्धपदप्राप्त-सर्वसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस द्वीप धातकी में कृत्रिम अकृत्रिम अगणित नदियाँ हैं।
सब आर्यखंड में उपसागर सरवर कूपादिक नदियाँ हैं।।
इन सबके जल के ऊपर से बहुतेक साधुगण मुक्ति गये।
चारण ऋद्धीधर या उपसर्ग आदि से हम उन जजत भये।।5।।

ॐ ह्रीं धातकीखंडद्वीपसंबंधिकृत्रिमाकृत्रिमनदी-उपसागरकूपतडागादिजल-स्थानेभ्यःसिद्धपदप्राप्तसर्वसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस धातकि में दो मेरु अन्य अगणित पर्वत कूटादिक हैं।
धात्री तरु शाल्मलितरु आदिक बहुविध उपवनतरु आदिक हैं।।
इन नभस्थान से सिद्ध हुये ऋद्धीबल उपसर्गादिक से।
उन सब सिद्धों को पूजूँ मैं आतमनिधि मिल जावे जिससे।।6।।

ॐ ह्रीं धातकीखंडद्वीपसंबंधिमेर्वादिपर्वतकूटकृत्रिम-अकृत्रिमवृक्षादि-नभस्थानेभ्यःसिद्धपदप्राप्तसर्वसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कालोदधि मध्य कुभोगभूमि से मगध आदि द्वीप थल से।
चारणऋषि या उपसर्ग आदि कारण से मुनि शिवपुर पहुँचे।।
वर द्वीप जलधि के वेदी के थल से भी जो मुनि सिद्ध हुये।
उन सब सिद्धों को पूजूँ मैं ये मेरे सिद्धि निमित्त हुये।।7।।

ॐ ह्रीं कालोदधिसंबंधिकुभोगभूमि-आदिस्थलेभ्यः सिद्धपदप्राप्तसर्वसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कालोदधि के जल से कुभोगभूमी के नदी सरोवर से।
चारण ऋषि मुनि या उपसर्गादिक से मुनिगण शिवपुर पहुँचे।।
इन जल से मुक्ति प्राप्त मुनि को मैं नितप्रति शीश झुकाता हूँ।
इस सब सिद्धों को अर्घ चढ़ाकर शिव की आश लगाता हूँ।।8।।

ॐ ह्रीं कालोदधिसंबंधिकुभोगभूमि-आदिमध्यस्थितनदीसरोवरजलसमुद्र-जलेभ्यः सिद्धपदप्राप्तसर्वसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस सागर मध्य कुभोगभूमि मागध सुर आदि निवास बने।
उनमें जो पर्वतकूट शिखर तरु आदि नभस्थल हों जितने।।
उन पर से जो मुनि सिद्ध हुये उन सबको वंदन करता हूँ।
सब इष्ट वियोग अनिष्ट योग टल जाए अर्चन करता हूँ।।9।।

ॐ ह्रीं कालोदधिसंबंधिकुभोगभूमिमागधद्वीपादिमध्यस्थितपर्वतकूटवृक्षादि-स्थानेभ्यः सिद्धपदप्राप्तसर्वसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करवर द्वीप मध्य वलयाकृति मनुजोत्तर पर्वत सोहे।
इस परे मनुष नहिं जा सकते इस तक नरलोक चित्त मोहें।
इसमें जो कर्मभूमि अरु भोगभूमि वन उपवन स्थल हैं।
उन सबसे सिद्ध हुये जिनवर मुनिगण उन सबको वंदन है।।10।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपसंबंधिकर्मभूमिभोगभूमिवनउपवनवेदिकादिस्थलेभ्यः सिद्धपदप्राप्तसर्वसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस पुष्करार्ध में गंगादिक अगणित अकृत्रिम नदियाँ हैं।
कृत्रिम सरवर कूपादि तथा उपसागर आदिक नदियाँ हैं।।
इन जल से चारण बल से या उपसर्ग आदि से सिद्ध हुये।
उन सबको पूजूँ अर्घ्य चढ़ा मेरे सब मनरथ सफल हुये।।11।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपसंबंधिकृत्रिम-अकृत्रिमनदीसरोवर-उपसागरकूपतडा-गादिजलेभ्यःसिद्धपदप्राप्तसर्वसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस पुष्करार्ध में दो मेरू हिमवन आदिक बहुपर्वत हैं।
शाश्वत पर्वत कृत्रिम पर्वत इन गुफा कंदरा आदिक हैं।।
इन ऊपर से मुनि सिद्ध हुये पुष्कर शाल्मलि तरु आदिक से।
इन सब सिद्धों को पूजूं मैं रत्नत्रय निधी मिले जिससे।।12।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपसंबंधिमेर्वादि-अकृत्रिमकृत्रिमपर्वततन्मध्यगुहादिवृक्षादि-स्थानेभ्यः सिद्धपदप्राप्तसर्वसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छह माह आठ समयों में छह सौ, आठ मुनी शिव जाते हैं।
इस तरह अनंतानंत भूत, भावी नर सिद्ध कहाते हैं।।

उन सभी सिद्ध परमेष्ठी की, पूजा अर्चा स्तुती करूं।
निज आत्म सुधारस पी करके , निज में ही निज को प्रगट करूं।।13।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपस्थ-अष्टसमयाधिकषण्मासात् अष्टोत्तरषट्शतमुनि-सिद्धपदप्राप्त-त्रैकालिकसर्वसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सिद्धशिला के 7 अर्घ्य)

-शंभु छंद-

इस सिद्धशिला से ऊपर में, तनुवातवलय में सिद्ध रहें।
सैंतीस लाख छयासी हजार नव सौ पचहत्तर धनुष कहें।।
इतने ऊपर जा पाँच शतक, पच्चीस धनुष अवगाहन से।
उत्कृष्ट अवगाहन खड्गासन, से सब सिद्ध प्रभू वहाँ पर तिष्ठें।।1।।

ॐ ह्रीं सिद्धशिलोपरितनुवातवलयान्तविराजमानोत्कृष्टपंचशतपंचविंशति-धनुःप्रमाणावगाहनाधारकत्रैकालिकानंतानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

इस सिद्धशिला से ऊपर में तनुवातवलय में आदिनाथ।
सैंतीस लाख सत्यासि सहस, ढाई सौ धनुष उपरि भाग।।
ये पंच शतक धनु अवगाहन, से पद्मासन में राजे हैं।
लोकाग्रभाग में ऋषभदेव, इनको वंदत भव हाने हैं।।2।।

ॐ ह्रीं सिद्धशिलोपरितनुवातवलयान्तविराजमानमध्यमपंचशतधनुः-प्रमाणावगाहनाधारकपद्मासनसिद्धपदप्राप्त-श्रीऋषभदेवसिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

इस सिद्धशिला से ऊपर में, तनुवातवलय में शांतिनाथ।
सैंतीस लाख सत्यासि सहस, चउशतक आठ है धनुष अंत।।
चालीस धनुष अवगाहन से, खड्गासन तिष्ठें उन्हें नमूँ।
लोकाग्रभाग पर रहें अनंतों, काल शांतिजिन को प्रणमूँ।।3।।

ॐ ह्रीं सिद्धशिलोपरितनुवातवलयान्तविराजमानमध्यमचत्वारिंशद्धनुः-प्रमाणावगाहनाधारकश्रीशांतिनाथसिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

इस सिद्धशिला से ऊपर में, तनुवातवलय में कुंथुनाथ।
सैंतीस लाख सत्यासि सहस, चउशत पैंसठ सुधनुष अंत।।

पैंतीस धनुष अवगाहन से, खड्गासन तिष्ठें उन्हें नमन।
त्रैलोक्य शिखर पर रहें अनंतों, काल कुंथुप्रभ को प्रणमन।।4।।

ॐ ह्रीं सिद्धशिलोपरितनुवातवलयान्तविराजमानमध्यमपंचत्रिंशद्धनुः-प्रमाणावगाहनाधारकश्रीकुंथुनाथसिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

इस सिद्धशिला से ऊपर में, तनुवातवलय में अर जिनवर।
सैंतीस लाख सत्यासि सहस, चउशत सत्तर हैं धनुष उपर।।
प्रभु तीस धनुष अवगाहन से, खड्गासन तिष्ठें नमूँ उन्हें।
प्रभु काल अनंतानंतों तक, राजेंगे पूजत सिद्ध बनें।।5।।

ॐ ह्रीं सिद्धशिलोपरितनुवातवलयान्तविराजमानमध्यमत्रिंशद्धनुः-प्रमाणावगाहनाधारकखड्गासनसिद्धपदप्राप्तश्रीअरनाथसिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

इस सिद्धशिला से ऊपर में, तनुवातवलय में महावीर।
सैंतीस लाख सत्यासि सहस, चउ सौ अट्ठानवे धनु ऊपर।।
इक हाथ उपरि भी जा करके, अवगाहन सात हस्त प्रम हैं।
खड्गासन राजें लोकशिखर, उन वीरप्रभू को प्रणमन है।।6।।

ॐ ह्रीं सिद्धशिलोपरितनुवातवलयान्तविराजमानमध्यमसप्तहस्तावगाहना-प्रमाणशरीराकारधारकखड्गासनसिद्धपदप्राप्तश्रीमहावीरतीर्थंकरसिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

इस सिद्धशिला से ऊपर में, तनुवातवलय में सिद्धनाथ।
सैंतीस लाख सत्यासि सहस, चउ सौ निन्यानवे अर्घ्य हाथ।।
ऊपर में जाकर जघन्य साढ़े, तीन हाथ अवगाहन से।
सब सिद्ध अनंतानंत कहे, त्रैकालिक प्रणमूँ शिरनति से।।7।।

ॐ ह्रीं सिद्धशिलोपरितनुवातवलयान्तविराजमानजघन्यसार्धत्रयहस्त-प्रमाणावगाहनाधारकत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

-पूर्णार्घ्य-

यह सिद्धशिला पैंतालिस लाख सुयोजन मनुज लोक प्रम है।
सर्वत्र अनंतानंत सिद्ध से भरी अकृत्रिम अनुपम है।।

गणधर मुनिगण से वंद्य शिला इसको मेरा शत शत वंदन।
यह सिद्धशिला न मिले जब तक तब तक इसको शत शत वंदन।।1।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यशिखरस्थितपंचचत्वारिंशल्लक्षयोजनप्रमाणसिद्धशिलायै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन ढाई द्वीप दो सागर तक पैंतालिस लाख सुयोजन हैं।
यह मनुज लोक इसमें ही मानव मुक्ति प्राप्त कर सकते हैं।।
इसमें थल जल पर्वत चोटी आदिक सब थल से सिद्ध हुये।
अणुमात्र जगह नहिं रिक्त यहाँ सब सिद्धों को मैं धरूँ हिये।।2।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपद्विसमुद्रप्रमितमनुष्यलोकस्थितसर्वजलस्थलपर्वतवृक्ष–गुहादिस्थानेभ्यःसिद्धपदप्राप्तसर्वसिद्धेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ ढाईद्वीप से सिद्धपद प्राप्त सिद्धों के 170 अर्घ्य

(तृतीय वलय में 170 अर्घ्य)

–दोहा –

सिद्धों को यजते मिले, सर्व ऋद्धि नवनिद्धि।
पुष्पांजली चढ़ावते, सर्व मनोरथ सिद्ध।।

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जम्बूद्वीप से सिद्धपद प्राप्त सिद्धों के 34 अर्घ्य

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्तसिद्धशिलो-परिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्तसिद्धशिलो-परिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-कच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्तसिद्ध–शिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुकच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्तसिद्धशिलो-

परिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-महाकच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-कच्छकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-आवर्ताविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-लांगलावर्ताविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-पुष्कलाविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-पुष्कलावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।10।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-वत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।11।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुवत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।12।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-महावत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।13।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-वत्सकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।14।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-रम्याविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।15।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुरम्याविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।16।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-रमणीयाविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।17।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-मंगलावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।18।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-पद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।19।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुपद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।20।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-महापद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।21।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-पद्मकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।22।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-शंखाविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।23।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-नलिनीविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।24।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-कुमुदाविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।25।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सरिताविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।26।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-वप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।27।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुवप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।28।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-महावप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।29।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-वप्रकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।30।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-गंधाविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।31।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुगंधाविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।32।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-गंधिलाविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।33।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-गंधमालिनीविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।34।।

-पूर्णार्घ्य (दोहा)-

त्रिभुवनपति त्रिभुवन धनी, त्रिभुवन के गुरु आप।
त्रिभुवन के चूड़ामणी, नमूँ नमूँ नत माथ।।1।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थित–अचिन्त्यविभूतियुक्त–श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

पूर्वधातकीखण्डद्वीप से सिद्धपदप्राप्त सिद्धों के 34 अर्घ्य

दोहा– चिन्मूरति चिंतामणी, चिंतित फलदातार।
पुष्पांजलि से पूजहूँ, पाऊँ सौख्य अपार।।

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।35।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।36।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-कच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।37।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-सुकच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।38।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-महाकच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहाा।।9।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-कच्छकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।40।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-आवर्ताविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।41।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-लांगलावर्ताविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।42।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-पुष्कलाविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।43।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-पुष्कलावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।44।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-वत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।45।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-सुवत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।46।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-महावत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।47।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-वत्सकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपद-प्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।48।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-रम्याविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्त-सिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।49।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-सुरम्याविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्त-सिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।50।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-रमणीयाविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।51।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-मंगलावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपद-प्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।52।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-पद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्त-सिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।53।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-सुपद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्त-सिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।54।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-महापद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपद–प्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।55।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-पद्मकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपद-प्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।56।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-शंखाविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्त-सिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।57।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-नलिनीविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्त-सिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।58।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-कुमुदाविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्त-सिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।59।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-सरिताविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्त-सिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।60।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-वप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्त-सिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।61।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-सुवप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्त-सिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।62।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-महावप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्त-सिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।63।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-वप्रकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपद-प्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।64।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-गंधाविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्त-सिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।65।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-सुगंधाविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्त-सिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।66।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-गंधिलाविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्त-सिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।67।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-गंधमालिनीविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपद-प्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।68।।

पूर्णार्घ्य (शंभु छंद)

जो समवसरण के स्वामी हैं, वे जिनवर शिवलक्ष्मी वरते।
वे शरणागत के रक्षक हैं, भक्तों को मोक्ष दिला सकते।।
मैं निज समतारस का इच्छुक, अतएव शरण में आया हूँ।
बस पूरण अर्घ्य चढ़ा करके, गुण पूरण करने आया हूँ।।2।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थितसिद्धपदप्राप्त-सिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

पश्चिमधातकीखण्डद्वीप से सिद्धपद प्राप्त सिद्धों के 34 अर्घ्य

दोहा– **धर्मामृतमय वचन की, वर्षा से भरपूर।**
भविजन कलिमल धोवते, करो हमें सुखपूर।।1।।

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्त-सिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।69।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्त-सिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।70।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-कच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।71।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-सुकच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्ध-पदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।72।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-महाकच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।73।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-कच्छकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।74।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-आवर्ताविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्ध-पदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।75।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-लांगलावर्ताविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।76।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-पुष्कलाविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्ध-पदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।77।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-पुष्कलावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।78।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-वत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपद-प्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।79।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-सुवत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्ध-पदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।80।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-महावत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।81।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-वत्सकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।82।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-रम्याविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपद-प्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।83।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-सुरम्याविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्ध-पदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।84।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-रमणीयाविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्ध-पदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।85।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-मंगलावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।86।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-पद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डात्सिद्धपद-प्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमान त्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।87।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-सुपद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमान त्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।88।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-महापद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्ध-पदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।89।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-पद्मकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।90।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-शंखाविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्ध-पदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।91।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-नलिनीविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्ध-पदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।92।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-कुमुदाविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्ध-पदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।93।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-सरिताविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्ध-पदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।94।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-वप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्ध-पदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।95।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-सुवप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्ध-पदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।96।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-महावप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्ध-पदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।97।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-वप्रकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।98।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-गंधाविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।99।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-सुगंधाविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्ध–पदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।100।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-गंधिलाविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्ध–पदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।101।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-गंधमालिनीविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।102।।

पूर्णार्घ्यं (दोहा)

तीर्थंकर जिनसिद्ध को, पूजूँ भक्ति समेत।
पूरण अर्घ्य चढ़ाय हूँ, पूर्ण सौख्य के हेतु।।3।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थित–सिद्धपदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमान–त्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

पूर्वपुष्करार्धद्वीप से सिद्धपदप्राप्त सिद्धों के 34 अर्घ्य

दोहा– सब कर्मों में एक ही, मोहकर्म बलवान।
उसके नाशन हेतु मैं, पूजूँ भक्ति प्रधान।।1।।

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।103।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।104।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-कच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।105।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सुकच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।106।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-महाकच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।107।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-कच्छकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।108।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-आवर्ताविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।109।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-लांगलावर्ताविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।110।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-पुष्कलाविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।111।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-पुष्कलावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपद-प्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।112।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-वत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपद-प्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।113।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सुवत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपद-प्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।114।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-महावत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपद-प्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।115।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-वत्सकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपद-प्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।116।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-रम्याविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपद-प्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।117।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सुरम्याविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपद-प्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।118।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-रमणीयाविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपद-प्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।119।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-मंगलावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपद-प्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।120।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-पद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपद-प्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।121।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सुपद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपद-प्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।122।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-महापद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्ध-पदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।123।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-पद्मकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपद-प्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।124।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-शंखाविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्त-सिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।125।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-नलिनीविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपद-प्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।126।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-कुमुदाविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपद-प्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।127।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सरितাविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपद-प्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।128।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-वप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपद-प्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।129।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सुवप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्त-सिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।130।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-महावप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्त-सिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।131।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-वप्रकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपद-प्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।132।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-गंधाविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्त-सिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।133।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सुगंधाविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्त-सिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।134।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-गंधिलाविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्त-सिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।135।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-गंधमालिनीविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपद-प्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।136।।

पूर्णार्घ्य (तोटक छंद)

वसु द्रव्य मिलाकर अर्घ्य लिया।
तुम अर्पत सौख्य अनर्घ्य लिया।।

सब सिद्धप्रभू हैं सौख्यप्रदा।
शत इंद्र जजें प्रभुपाद मुदा।।4।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थितसिद्धपदप्राप्त-सिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

पश्चिमपुष्करार्धद्वीप से सिद्धपदप्राप्त सिद्धों के 34 अर्घ्य

सोरठा– स्थिति औ अनुभाग, बंध कषायों से कहा।
इसके नाशन हेतु, पुष्पांजलि कर पूजहूँ।।1।।

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्त-सिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।137।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्त-सिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।138।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-कच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपद-प्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।139।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सुकच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपद-प्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।140।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-महाकच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपद-प्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।141।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-कच्छकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपद-प्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।142।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-आवर्ताविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपद-प्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।143।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-लांगलावर्ताविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्ध–पदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।144।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-पुष्कलाविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपद-प्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।145।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-पुष्कलावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्ध-पदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।146।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-वत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपद-प्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।147।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सुवत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपद-प्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।148।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-महावत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपद-प्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।149।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-वत्सकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्ध-पदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।150।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-रम्याविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपद-प्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।151।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सुरम्याविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपद-प्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।152।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-रमणीयाविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपद-प्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।153।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-मंगलावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपद-प्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।154।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-पद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपदप्राप्त-सिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।155।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सुपद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपद-प्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।156।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-महापद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपद-प्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।157।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-पद्मकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपद-प्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।158।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-शंखाविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपद-प्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।159।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-नलिनीविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपद-प्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।160।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-कुमुदाविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपद-प्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।161।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सरिताविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपद-प्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।162।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-वप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपद-प्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।163।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सुवप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपद-प्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।164।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-महावप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपद-प्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।165।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-वप्रकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्ध-पदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।166।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-गंधाविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपद-प्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।167।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सुगंधाविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपद-प्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।168।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-गंधिलाविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्धपद-प्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।169।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-गंधमालिनीविदेहक्षेत्रार्यखण्डात् सिद्ध-पदप्राप्तसिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।170।।

पूर्णार्घ्य (रोला छंद)

परमहंस परमेश, श्री तीर्थेश जिनेशा।
परमपिता भुवनेश, नमत शतेन्द्र हमेशा।।
सात भयों से दूर, पूर्ण अभय के दाता।
जो पूजें तुम नित्य, पावें अनुपम साता।।5।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थितसिद्धपदप्राप्त-सिद्धशिलोपरिविराजमानत्रैकालिकानन्तानंतसिद्धेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं अर्हं श्रीअनन्तानन्तप्रमसिद्धेभ्यो नमो नमः।

जयमाला

चाल-शेर

जय जय त्रिलोक शिखर अग्र सिद्धशिला है।
जय जय त्रिलोक शिखर अग्र मोक्ष इला है।।
जय जय अनंतानंत सिद्ध इस पे राजते।
जय जय त्रिकाल सिद्ध अनंत गुण से भासते।।1।।

सर्वार्थसिद्धि इंद्रक के ध्वजादंड से।
बारह सुयोजनोपरि भू आठवीं लसे।।
यह पूर्व अपर दिश में सु एक राजु है।
उत्तर दखिन में कुछ कम यह सात राजु है।।2।।

योजन सुआठ मोटी वायूवलय घिरी।
घनउदधि औ घनवायू तनुवायु से घिरी।।
इस मध्य 'ईषत्प्राग्भार' नाम क्षेत्र है।
चांदी सुवर्ण रत्नपूर्ण सिद्धक्षेत्र हैं।।3।।

उत्तान धवल छत्र सदृश सिद्धशिला ये।
योजन सुपैंतालीस लाख सिद्धशिला ये।।
ये आठ योजन मध्य में फिर अंत तक घटती।
नरलोक के प्रमाण है इस क्षेत्र की परिधी।।4।।

यह अर्ध चंद्रसम त्रिलोक अग्रभाग में।
अनंत अनंत सिद्ध वहाँ राजते निज में।।
तीर्थेश होके सिद्ध अनंते वहाँ तिष्ठें।
तीर्थेश बिना सिद्ध नंतानंत वहाँ पे।।5।।

जल थल व गगन से अनंत सिद्ध हुये हैं।
सामान्यकेवलि अंतकृत केवलि भि सिद्ध हैं।।
उत्कृष्ट पांच सौ पचीस धनु शरीर से।
जघन्य साढ़े तीन हाथ देह मात्र से।।6।।

मध्यम अनेक विधि की अवगाहना धरें।
ये सिद्ध हुये हम उन्हों को चित्त में धरें।।
जो ऊर्ध्वलोक अधोलोक तिर्यक्लोक से।
सब कर्म नाश सिद्ध हुये मर्त्यलोक से।।7।।

उत्सर्पिणी अवसर्पिणी के छहों काल से।
उपसर्ग निमित सिद्ध हुये नमूं भाल से।।
उपसर्ग बिना सिद्ध चौथे काल से हुये।
इन पाँच भरत पाँच ऐरावत से शिव गये।।8।।

दो ज्ञान त्रय व चार से कैवल्य पायके।
जो सिद्ध हुये हैं अनंत सौख्य पायके।।
जो साधु संहरण से सिद्ध भी अनंत हैं।
बिन संहरण अनंत सिद्ध हो रहे यहाँ।।9।।

कुछ साधु समुद्घात करके सिद्ध हुये हैं।
कुछ केवली बिन समुद्घात सिद्ध हुये हैं।।

खड्गासनों से सिद्ध भी अनंत हुये हैं।
पद्मासनों से भी अनंत सिद्ध हुये हैं।।10।।

सब द्रव्य से पुंवेदी ही सिद्ध हुये हैं।
हां भाव से त्रय वेद से भी सिद्ध हुये हैं।।
प्रत्येकबुद्ध स्वयंबुद्ध सिद्ध हुये हैं।
बोधितप्रबुद्ध भी अनंत सिद्ध हुये हैं।।11।।

सब आठ कर्म नाश करके सिद्ध हुये हैं।
वे इस सौ अड़तालीस प्रकृति नष्ट किये हैं।।
सब सिद्ध अंतिम देह से कुछ न्यून कहे हैं।
इस विध सो अन्त्यदेह के आकार रहे हैं।।12।।

ये सर्व सिद्ध गुण अनंतानंत धारते।
ये सर्व सिद्ध सुख अनंतानंत धारते।।
ये सर्व सिद्ध जन्म मरण शून्य हो गये।
ये सर्व सिद्ध ज्ञान गुण से पूर्ण हो गये।।13।।

इन ढाई द्वीप से अनंत सिद्ध हुये हैं।
दो ही समुद्र से अनंत सिद्ध हुये हैं।।
नरलोक में सब एक सौ सत्तर हैं कर्मभू।
इनमें जनम के प्राप्त करें मनुज मुक्तिभू।।14।।

नरलोक के अणुमात्र भी ना रिक्त थान है।
जहाँ से न हुये सिद्ध सब निर्वाण स्थान है।।
मेरु की चूलिका से भी सिद्ध हुये हैं।
वे मेरु की गुफा से ही सिद्ध हुये हैं।।15।।

अनंतानंत सिद्धों की वंदना करूँ।
मैं नित अनंतानंत बार वंदना करूँ।।
श्री सिद्धशिला को नमूँ मैं भक्ति भाव से।
ये सिद्धशिला प्राप्त करूँ भक्ति नाव से।।16।।

-दोहा-

नमूँ सिद्ध परमात्मा, सिद्धशिला मुनिवंद्य।
ज्ञानमती गुण पूर्ण कर, पाऊँ परमानंद।।17।।

ॐ ह्रीं त्रिलोकशिखरस्थितसिद्धशिलोपरिविराजमान-अनंतानंतसिद्धेभ्यः जयमाला महार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

-शंभु छंद-

श्री सिद्धशिला विधान भव्य, जो भाव भक्ति से करते हैं।
संपूर्ण मनोरथ सिद्ध करें, रत्नत्रय निधि को लभते हैं।।
फिर स्वात्मध्यान से स्वात्म सिद्धि, अर्हंत अवस्था पाते हैं।
कैवल्यज्ञानमति किरणों से, भविजन मन कमल खिलाते हैं।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

सिद्धशिला विधान प्रशस्ति

शांति कुंथु अरनाथ को, हृदय कमल में ध्याय।
जम्बूद्वीप के जिनभवन, नमूँ नमूँ सुखदाय।।1।।

वर्तमान में वीरप्रभु, शासनपति भगवान।
इनके शासन में हुए, बहु आचार्य महान।।2।।

मूलसंघ में कुंदकुंदगुरु, अन्वय सरस्वतिगच्छ।
बलात्कारगण में हुए, सूरि नमूँ मन स्वच्छ।।3।।

सदी बीसवीं के प्रथम, गुरु दिगम्बराचार्य।
चरितचक्रवर्ती श्री, शांतिसागराचार्य।।4।।

इनके शिष्योत्तम श्री, वीरसागराचार्य।
पहले पट्टाचार्य गुरु, नमूँ भक्ति उर धार्य।।5।।

वीर अब्द पच्चीस सौ, चालिस जगत्प्रसिद्ध।
पौष कृष्ण एकम तिथी, हस्तिनागपुर तीर्थ।।6।।

मैंने गणिनी ज्ञानमती, किया विधान पूर्ण।
सिद्धशिला का पाठ यह, करे सौख्य सम्पूर्ण।।7।।

जब तक जिनशासन सुखद, तब तक रहे विधान।
सब जग में मंगल करे, भरे सौख्य की खान।।8।।

जब तक जम्बूद्वीप की, कीर्ति जगत् में व्याप्त।
तब तक 'ज्ञानमती' कृती, रहे विश्वविख्यात।।9।।

सिद्धशिला विधान की आरती

–ब्र. कु. इन्दु जैन (संघस्थ)

तर्ज–माई रे माई .....

सिद्धशिला पर राजित, सिद्धों की भक्ती सुखकारी।
सिद्धशिला का यह विधान, है सदा सौख्य करतारी।।
बोलो सिद्धधाम की जय, जय हो सिद्धधाम की जय।।टेक.।।
तीन लोक के अग्रभाग पर, ऐसी सिद्धशिला है।
सिद्ध अनन्तानंत विराजें, सुन्दर मोक्ष इला है।।
अर्धचंद्र सम धवल छत्रयुत.....
अर्धचंद्र सम धवल छत्रयुत, वन्दन भव परिहारी।
सिद्धशिला का यह.....।।1।।
ढाईद्वीप के कण-कण से, निर्वाण पधारें भविगण।
अष्ट कर्म जब नाशें, अष्टम वसुधा पाई मनहर।।
पैंतालीस लाख योजन ये.....
पैंतालीस लाख योजन ये, कहें शास्त्र हितकारी।
सिद्धशिला का यह.....।।2।।
गणिनी ज्ञानमती माता ने, सुन्दर पाठ रचा है।
सिद्धप्रभू की भक्ती का, अनुपम सौभाग्य दिया है।।
हैं साक्षात् शारदा सम, ...
हैं साक्षात् शारदा सम, उनका वन्दन अघहारी।
सिद्धशिला का यह.....।।3।।
सिद्ध अनन्तानंत उन्हें मैं, भक्ति भाव से ध्याऊं।
सर्व मनोरथ सिद्ध करें, रत्नत्रय निधि को पाऊं।।
इक दिन सिद्धशिला मिल जाए.....
इक दिन सिद्धशिला मिल जाए, वरे 'इन्दु' शिवनारी।
सिद्धशिला का यह.....।।4।।

भजन

रचयित्री–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती माताजी

तर्ज–सबसे बड़ी मूर्ति का.....

तीन लोक यात्रा करो, सिद्धशिला तक भी चलो,
सिद्ध प्रभु का दर्शन मिलेगा, आत्मतत्व का कमल खिलेगा।। टेक.।।

जम्बूद्वीप हस्तिनापुरी में।
रचनाएँ मनोहर बनी हैं।।
तीन लोक भी बना है सुन्दर।
जिसमें बने हैं महल व मंदिर।।

देखो जरा ठीक से, रचना को नजदीक से,
ज्ञानदीप मन में तब जलेगा, आत्मतत्त्व का कमल खिलेगा।। तीन.।।1।।

सात नरक अधोलोक में हैं।
जहाँ मात्र दुख ही अनंते हैं।।
जिनभवन भी हैं प्रथम धरा में।
खर व पंक भाग दिख रहा है।।

पाप ना कमाना कभी, नरक में न जाना कभी,
अशुभ कर्म तब नहीं बंधेगा, आत्मतत्त्व का कमल खिलेगा।। तीन.।।2।।

मध्यलोक जिनवरों का दर्शन।
करो ऊर्ध्वलोक का भी वंदन।।
सिद्धशिला अर्धचन्द्र सम है।
वहाँ राजे सिद्धों को नमन है।।

"चन्दनामती" चलो, सीढ़ियाँ चढ़े चलो,
दर्श सिद्ध प्रभु का अब मिलेगा, आत्मतत्त्व का कमल खिलेगा।। तीन.।।3।।

भजन

रचयित्री–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती माताजी

तर्ज–जंगल जंगल धूम मची है.....

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर से, बात सुनी है।
तीन लोक की रचना सुन्दर, वहाँ बनी है।-2
जम्बूद्वीप से पता चली है, बात सुनी है, बात सुनी है।
तीन लोक की रचना सुन्दर, वहाँ बनी है, वहाँ बनी है।।टेक.।।

ज्ञानमती, माताजी की, प्रेरणा मिली है।
इसीलिये, भक्तों में नव, चेतना खिली है।-2
मैंने टी.वी. के माध्यम से, बात सुनी है।
अरे, तीन लोक की रचना सुन्दर वहाँ बनी है।-2
तीन लोक की रचना सुन्दर, वहाँ बनी है, वहाँ बनी है।।1।।

अधोलोक में, नरक भयावह, देखो कितने।
पापकर्म, करने वाले, जाते हैं उनमें।।
मध्यलोक से मोक्षगमन की, बात सुनी है।
अरे, तीन लोक की रचना सुन्दर वहाँ बनी है।-2
तीन लोक की रचना सुन्दर, वहाँ बनी है, वहाँ बनी है।।2।।

ऊर्ध्वलोक में, स्वर्ग देखकर, मन ललचाता।
पुण्यकर्म, करने से मानव, स्वर्ग में जाता।।
अर्धचन्द्रसम सिद्धशिला की, बात सुनी है।
अरे, तीन लोक की रचना सुन्दर वहाँ बनी है।-2
तीन लोक की रचना सुन्दर, वहाँ बनी है, वहाँ बनी है।।3।।

यूँ तो सिद्ध, शिला से वापस, कोई न आता।
शाश्वतकाल, वहीं आत्मा, सुख-शांती पाता।।
उस सुख की तुलना संसार में, कहीं नहीं है।
अरे, तीन लोक की रचना सुन्दर वहाँ बनी है।-2
तीन लोक की रचना सुन्दर, वहाँ बनी है, वहाँ बनी है।41।।

कृत्रिम सिद्ध, शिला का भाव से, दर्शन करना।
सदा हृदय में, सिद्ध प्रभू का, सुमिरन करना।।
यही 'चंदनामती' आज, भावना बनी है।
अरे, तीन लोक की रचना सुन्दर वहाँ बनी है।-2
तीन लोक की रचना सुन्दर, वहाँ बनी है, वहाँ बनी है।।5।।

भजन

रचयित्री–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती माताजी

तर्ज–शायद प्रभु की पूजा का खयाल .....

पंचमकाल में पहला स्वर्णिम अवसर आया है,
विश्व की सबसे ऊंची प्रतिमा हमने पाया है।।टेक.।।
इक सौ आठ है फुट की प्रभुवर ऋषभदेव की प्रतिमा।
है आश्चर्य इस धरती का, अनुपम है इसकी गरिमा।।
गणिनीप्रमुख ज्ञानमती माताजी ने बताया है।
विश्व की सबसे ऊंची प्रतिमा हमने पाया है।।1।।
कर्मठता की मूरत है, स्वामी रवीन्द्रकीर्ती जी।
जन जन के संग करते हैं, माता की इच्छा पूर्ती।
हर जैनी ने इस निर्माण में द्रव्य लगाया है।
विश्व की सबसे ऊंची प्रतिमा हमने पाया है।।2।।
हम सबके धन धन्य नयन हैं, इस निर्माण को लखकर।
धन्य धरा अम्बर भी धन्य जिनधर्म ध्वजा फहराकर।।
चलो ''चंदनामती'' प्रभू ने सबको बुलाया है।
विश्व की सबसे ऊंची प्रतिमा हमने पाया है।।3।।

भजन

रचयित्री-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज–चांदनपुर के गाँव में. .....

मांगीतुंगी तीर्थ से आमंत्रण आया है, हम सब मांगीतुंगी जाएंगे।
मांगीतुंगी जाएंगे, वहाँ पंचकल्याण रचाएंगे।।मांगीतुंगी.....।।टेक0।।

विश्व की सबसे ऊँची प्रतिमा, पर्वत पर वहाँ प्रगट हुई।
ऋषभदेव भगवान की इक सौ अठ फुट प्रतिमा राज रही।।
उसी के पंचकल्याणक का अब अवसर आया है, हम सब मांगीतुंगी जाएंगे।।1।।

विश्वविभूती ज्ञानमती, माताजी की यह महिमा है।
सन् उन्निस सौ छियानवे के, चातुर्मास की गरिमा है।।
उनकी ही प्रेरणा का प्रतिफल सम्मुख आया है, हम सब मांगीतुंगी जाएंगे।।2।।

विश्व के आश्चर्यों में यह आश्चर्य प्रथम बन जाएगा।
सारा जग इस वीतराग प्रतिमा को शीश नमाएगा।।
पंचमकाल में पहला स्वर्णिम अवसर आया है, हम सब मांगीतुंगी जाएंगे।।3।।

सभी दिगम्बर जैनों ने अपनी अर्थांजलि दी इसमें।
तभी ''चन्दनामती'' आज प्रतिमा प्रगटी है पर्वत में।।
अब रवीन्द्रकीर्ति ने सब भक्तों को बुलाया है, हम सब मांगीतुंगी जाएंगे।।4।।

भजन

रचयित्री–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती माताजी

तर्ज–मनिहारों का रूप.....

शारद माता का रूप दिखाया,
ज्ञान का तूने अलख जगाया।। टेक.।।
दीक्षा लेती न थीं क्वांरी कन्या यहाँ,
बीसवीं सदि में तुमने प्रथम पद लिया।
ज्ञानमति नाम तब तूने पाया, ज्ञान का तूने अलख जगाया।
।।शारद...।।1।।
कोई साहित्य रचना न की साध्वी ने,
सैकड़ों ग्रन्थ अब रच दिए मात ने।
कुन्दकुन्द का पथ दरशाया, ज्ञान का तूने अलख जगाया।
।।शारद...।।2।।
जैन भूगोल रचना नहीं थी कहीं,
मात्र प्राचीन ग्रन्थों में वह थी कही।
जम्बूद्वीप का रूपक दिखाया, ज्ञान का तूने अलख जगाया।
।।शारद...।।3।।
जिनवरों की जनमभूमि विकसित न थीं,
प्रेरणा उनके उद्धार की माँ ने दी।
ऋषभ महावीर नाम गुंजाया, ज्ञान का तूने अलख जगाया।
।।शारद...।।4।।
जैन संस्कृति की तू इक धरोहर है मां,
युग युगों तक जिए तू कहें ''चन्दना''।
धरती चाहे सदा तेरी छाया, ज्ञान का तूने अलख जगाया।
।।शारद...।।5।।